रघुवीर सहाय

उसका रहना

रोज़ सवेरे उठ कर पाते हो उसको तुम घर में
इससे यह मत मान लो वह हरदम मौजूद रहेगी ।

एक समय था
Delhi, Rajkamal Prakashan, 1995: 122